International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 05-08-2020; Accepted: 20-08-2020; Published: 06-09-2020
Volume 2; Issue 3; 2020; Page No. 22-25

सुदर्शन की कहानियाँ: स्याह पर सफ़ेद की विजय गाथाएँ

बृज किशोर वशिष्ट
एसोसिएट प्रोफेसर, मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश

सुदर्शन प्रेमचंदयुगीन हिंदी कथा साहित्य के महत्त्वपूर्ण लेखक हैं। उनका पहला कहानी संग्रह सन 1919 में प्रकाशित हुआ और वे देहावसान (सन 1967) तक लगभग पाँच दशक तक विविध लेखन कार्यों में सक्रिय रहे। हिंदी सिने जगत में भी उनका योगदान अभूतपूर्व है। उनकी लगभग प्रत्येक कहानी असत्य पर सत्य की जीत को चित्रित करती है। वे अपनी कहानियों में यथार्थ को प्रतिबिंबित करते हैं लेकिन कहानी जब चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है तो वे यथार्थ की कटुता को आदर्श की मिठास में प्रस्तावित करते हैं। इस प्रकार स्याह वास्तविकता की पराजय उनकी कहानियों का मूल मंत्र है। अधिकांश कहानियों में सुदर्शन ने जो समस्या के समाधान दिए हैं वे व्यावहारिक न होकर मानवतावादी हैं। सुदर्शन की कहानियों में युगानुरूप आदर्शवादी दृष्टि का आग्रह स्पष्ट दिखाई देता है। इससे कई स्थलों पर उनकी कहानियों में यथार्थवादी पकड़ ढीली हुई है। उनकी कहानियों में संयोग के रूप में घटनाएँ तीव्रता से घटती हैं। भौतिक सुखों का त्याग इनके पात्र निःसंकोच कर देते हैं। उच्च मानवीय गुणों के प्रदर्शन के लिए वे धन-सम्पदा को ठोकर मारने में देर नहीं करते।

मूल शब्द: सुदर्शन, आदर्श, यथार्थ, मानवीय गुण, कहानी

प्रस्तावना

सुदर्शन प्रेमचंदयुगीन हिंदी कथा साहित्य के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लेखक हैं। उनकी सृजन यात्रा सन 1919 से आरंभ होकर सन 1962 तक अनवरत चलती रहती है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी कहानियों का विपुल संसार है। उन्होंने अनेक गीत लिखे हैं। की नाटकों की रचना की है। एकाधिक उपन्यासों के लेखक हैं। विपुल बाल साहित्य की रचना की है। कई हिंदी फिल्मों के लेखक हैं और अनेक फिल्मों के गीत उन्होंने लिखे हैं। प्रेमचंद का सुदर्शन पर बहुत प्रभाव था। वे एक साक्षात्कार में स्वयं इस प्रभाव के विषय में कहते हैं कि, "देशी लेखकों में प्रेमचंद का प्रभाव मुझ पर सबसे अधिक पड़ा है। उनकी कहानियाँ पढ़कर मुझे कहानी लिखने का शौक हुआ। उनसे कोई सबक नहीं लिया; पर हमेशा उन्हें गुरु माना।"1 प्रेमचंदरूपी वटवृक्ष की छाया के कारण उनका हिन्दी साहित्य जगत में उनको वह स्थान नहीं मिल सका जिसके वे अधिकारी थे। बटरोही ने प्रेमचंद और सुदर्शन की तुलना करते हुए कहा है कि, "प्रेमचंद ने अपनी प्रारम्भिक कहानियों में समाज की बाहरी समस्याएँ उठाई हैं और उसी के अनुसार सुधारवादी निष्कर्ष दिए हैं। सुदर्शन एक दृष्टि से उसी सुधारवादी परंपरा के कथाकार हैं, किंतु उनकी प्रक्रिया प्रेमचंद की अपेक्षा अधिक गहन है। सुदर्शन की कहानियों का मूल बिंदु सच और झूठ के द्वंद्व का वह रूप है, जिसके प्रभाव में व्यक्ति निरंतर उलझता जा रहा है। अपनी प्रारम्भिक कहानियों में सुदर्शन ने भी सुधारवादी निष्कर्ष ही दिए हैं, किंतु प्रेमचंद की अपेक्षा सुदर्शन के निष्कर्ष तार्किक अधिक हैं। सुदर्शन के पात्रों का भी हृदय परिवर्तन होता है, किंतु उसके लिए वह तर्कों द्वारा पाठक की पूरी सहानुभूति संचित कर लेते हैं।"2

सुदर्शन के कथा साहित्य पर प्रेमचंद का प्रभाव देखा जा सकता है। प्रेमचंद ही की तरह उनकी कहानियों में अंततः आदर्शवाद की स्थापना होती है। परमानंद श्रीवास्तव का मानना है कि, "सुदर्शन भी पुराने कहानीकारों की भांति जब किसी समस्या को उठाते हैं, तो वक्तव्य सा देने लगते हैं। मंगल प्रकाश की कामना से उनकी रचनात्मक चेतना अभिभूत तो है पर वह स्वाभाविक रूप से उनकी कहानियों में यथार्थ का बोझ बनकर व्यक्त नहीं होती। सुदर्शन की मानसिक प्रक्रिया भी मूलतः भावात्मक ही है। उस पर युग के यथार्थ बोध की वह आघातपूर्ण प्रतिक्रिया नहीं दिखाई देती जो प्रेमचंद की रचना प्रक्रिया की स्वाभाविक विशेषता है। साथ ही एक समझौतावादी मध्यवर्गीय अवसर-चेतना सुदर्शन को कठिन रचनात्मक संकल्प की ओर बढ़ने से रोकती रही है।"3

सुदर्शन की कहानियों में प्रतिनायक कथानक के चरम पर पहुँचकर नायक बन जाता है। पाठक पूरी कहानी में जिसे खल पात्र समझ रहा होता है वह पात्र कहानी के अंत तक आते-आते अपने भीतर के नायकत्व को सामने ला खड़ा करता है और अचानक उस पात्र के प्रति पूरी कहानी में बनी धारणा ध्वस्त हो जाती है। यह सुदर्शन की कहानियों के शिल्प की विशेषता है। उनकी लगभग हर कहानी के अंत में खल पात्र अपने किए पर पछताता है और उसका स्याह रंग साफ होकर सफ़ेद हो जाता है। उनकी एक कहानी से हम अपनी बात स्पष्ट करेंगे। कहानी का शीर्षक है "प्रारब्ध परिवर्तन"। कहानी का प्रमुख पात्र सुल्तान सिंह एक रईस का बिगड़ा हुआ बेटा है। बाप के मर जाने के बाद वह अपना सारा धन ऐय्याशी में उड़ा देता है। वह एक साल के भीतर-भीतर फिर से अमीर बनने के लिए और अपने प्रारब्ध को बदलने के लिए एक स्याह योजना बनाता है। अपने मित्र सागरचंद को अपनी इस योजना के बारे में बताता है। योजना बहुत ही खतरनाक है। इसमें वह जल्द से जल्द शादी करेगा और फिर अपनी पत्नी का बहुत बड़ी राशि का बीमा कराएगा। एक साल बीतने से पहले उसकी पत्नी की मौत हो जाएगी और बीमा धन से उसका प्रारब्ध परिवर्तन हो जाएगा। योजना के अनुसार वह शादी करता है। अपनी पत्नी का एक लाख का बीमा भी करा देता है। वह अपनी पत्नी को धीमा जहर लाकर देता है और कहता है कि यह ताकत बढ़ाने का टॉनिक है। दैवयोग से होता यह है कि वह खुद बीमार पड़ जाता है और उसकी सेवा करने के क्रम में उसकी पत्नी उस जहर को पीना भूल जाती है। स्त्री की सेवा से प्रभावित होकर सुल्तान सिंह का हृदय परिवर्तन हो जाता है। वह अपनी पत्नी सतवंती से टॉनिक (जहर) के बारे में पूछता है तो वह बताती है कि, "आपकी बीमारी के कारण मुझे इसके पीने का ध्यान ही न रहा। क्षमा कर दें अब पी लिया करूंगी।"4 सुल्तान सिंह बोतल तोड़ देता है। अब उसे वास्तविक धन मिल चुका था। अपनी कहानियों की रचना-प्रक्रिया पर उनका कहना है कि, "कहानी का शुरू करना मुश्किल होता है; मुश्किल क्या एक समस्या होती है, कैसे शुरू किया जाय? शुरू होने पर कहानी अपने आप चलती रहती है। खत्म होना उसका काम है। प्लॉट जो सोचता हूँ, बीच में ही बदल जाता है कई प्लॉट वर्षों से दिमाग में हैं, पर उनके लिए urge नहीं आई। फिल्म स्टोरी को छोड़कर मैंने कोई कहानी पूर्वसंयोजित (preplanned) नहीं लिखी। कहानी में थीम शुरू की ही रहती है, केवल उसका रूप बदल जाता है।"5

उनकी कहानियाँ मानव मन के बदलने के दस्तावेज़ हैं। सामान्यतः मनुष्य का स्वभाव बहुत स्थाई होता है। किसी आकस्मिक दबाव में वह थोड़ी देर के लिए बदल तो सकता है लेकिन स्वभाव हमेशा के लिए बदल जाएगा यह संभव प्रतीत नहीं होता। सुदर्शन अपनी कहानियों में मनुष्यता की विजय दिखलाना चाहते थे, इसलिए उनके पात्र अनुकूल स्थिति पाकर सदैव दुर्गुणों को त्यागकर सद्गुण अपना लेते हैं और इस प्रकार वे सदा के लिए बदल जाते हैं। यह एक आदर्शवादी स्थिति है, समाज को बदलने के लिए लेखक का एक स्वप्न है।

आधुनिक साहित्य में जिस मनुष्य ने ईश्वर, धर्म और राजा के स्थान पर साहित्य में केन्द्रीय पद पा लिया है उस मनुष्य पर सुदर्शन की गहरी आस्था है। वे मानवीय कमजोरियों का चित्रण यथार्थवादी तरीके से करते हैं। मनुष्य की तमाम बुराइयों को पाठक के समक्ष खोलकर रख देते हैं लेकिन कहानी का अंत वे मनुष्य की खूबियों को उजागर करते हुए करते हैं। उदाहरण के लिए उनकी 'सेवा धर्म' कहानी को देखा जा सकता है। पूरन चंद दीवाली की रात जुआ खेलता है। दफ्तर में खजांची था। अपनी तनख्वाह जब जुए में हार गया तो रात में दफ्तर खुलवाकर चार सौ रुपए चुरा लाया और वे भी हार गया। अब उसे अपने सामने अंधेरा दिखने लगा। पिता सुरजन सिंह अमीर आदमी थे लेकिन वे कंजूस थे। पूरन चंद उनके सामने शर्मिंदा नहीं होना चाहता था। उनका एक पुराना नौकर था रौनकी। वह पूरन चंद से बहुत प्रेम करता था। पूरन चंद ने उसके सामने बचाने की गुहार लगाई। कारण नहीं बताया। पूरन चंद ने एक हार रौनकी को दिया और कहा कि इसे बाज़ार में बेचकर रुपए ला दे। रौनकी ने अपनी आमदनी में से रुपया-रुपया बचाकर छह सौ रुपए इकट्ठे कर रखे थे। उसने वे पूरन चंद के हाथ में थमा दिए। ये रुपए उसने अपने कमरे में ज़मीन में दबाकर रखे थे। वह ज़मीन से रुपए निकालने के बाद हार दबाना भूल गया और फिर राय साहब सुरजन सिंह ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। रौनकी ने पूरन चंद की करतूत का खुलासा न करके स्वयं अपराध स्वीकार कर लिया। उसे मालिक ने घर से निकाल दिया। कुछ समय बाद राय साहब का देहांत हो गया और फिर स्वाभाविक रूप से सब धन-दौलत पूरन चंद के हाथ में आ गई। उसने रौनकी के पास चार सौ रुपए का मनीऑर्डर भेजा। लेकिन लौटती डाक से उसे पता चला कि रौनकी तो एक साल पहले ही मर चुका है और साथ ही यह भी कि ऐसा प्रतीत होता है कि उसे कोई रोग था लेकिन उसने कभी किसी को कुछ नहीं बताया। अब कहानी के अंत में सुदर्शन लिखते हैं, "पूरन चंद पर इसका ऐसा प्रभाव हुआ कि कई दिन तक रोता रहा। अब उसने जुआ खेलना छोड़ दिया है। उसने रौनकी के नाम पर एक धर्मशाला बनवा दी है। उसमें उसकी मूर्ति रक्खी है। लोग उसकी मूर्खता पर हँसते हैं। परंतु वह समझता है कि रौनकी के बलिदान के सामने उसकी इतनी भी गणना नहीं है जितनी सुर्य्य के सामने एक तुच्छ परमाणु की हो सकती है। रौनकी स्वामीभक्त था, पूरन चंद दास-भक्त है।"6 कहानी का अंत रौनकी के बलिदान को महिमामंडित करता है।

सुदर्शन के यहाँ मानवीय संबंधों की बड़ी प्रतिष्ठा है। प्रेम, करुणा, दया, ममता, बलिदान, सेवा भावना और क्षमा उनके कथ्य के आधार स्तम्भ हैं। किसी को क्षमा करके हम उसके जीवन को किस प्रकार बचा सकते हैं इसका उनकी कहानी 'अपनी तरफ देखकर' एक श्रेष्ठ उदाहरण है। कहानी मैं शैली में लिखी गई है। कहानी एक दफ्तर की है। वाचक के दफ्तर में एक क्लर्क था जिसका नाम साधुराम था। बहुत नेकनीयत, परिश्रमी और संतोषी और खुशमिजाज़। वाचक उससे प्रभावित था। साधुराम की तनख्वाह पच्चीस रुपए थी। वाचक समय आने पर साधुराम की तरक्की भी कर देता है और उसकी तनख्वाह बढ़कर पचास रुपए हो जाती है। एक बार साधुराम की पत्नी बीमार पड़ जाती है तो वह तन-मन-धन से उसकी सेवा करता है। सौदागरमल जिसके यहाँ से दफ्तर के लिए कागज़ खरीदा जाता था, वह साधुराम की वाचक से शिकायत करता है कि इसने मेरे कर्मचारी के साथ मिलकर नकली बिल बनवाए हैं और चार सौ रुपए उड़ा लिए हैं। वाचक को बहुत गुस्सा आता है। साधुराम अपना अपराध स्वीकार कर लेता है और स्त्री की बीमारी का हवाला देकर माफ कर देने की गुहार लगाता है। वाचक उसे आदर्श मानता था। वह उसे दंडित करना चाहता है परंतु उसे अपना अतीत याद आ जाता है। एक बार जरूरत पड़ने पर उसने भी ऐसी ही बेईमानी की थी। वह साधुराम को माफ कर देता है और सोचता है, "और मैं सोचता हूँ उस समय अगर मैं उसे माफ न कर देता, तो आज वह क्या होता? चोर या डाकू या हत्यारा। आज वह समाज का एक मुफीद पुरजा है। उस समय वह समाज का गला-सदा फोड़ा होता।"7 इस प्रकार उनकी यह कहानी भी आध्यात्मिक समाधान प्रस्तुत करती है हालांकि सुदर्शन की अधिकांश कहानियों में इसी प्रकार के निष्कर्ष मिलते हैं लेकिन कुछ कहानियाँ हैं जिनके निष्कर्ष काल्पनिक-आध्यात्मिक न होकर व्यावहारिकता के अधिक नजदीक हैं। उदाहरण के लिए उनकी कहानी 'संन्यासी' को देखा जा सकता है। इस कहानी का प्रमुख पात्र पालू अपने दो भाइयों और माता-पिता के साथ गुजरात के एक गाँव में रहता था। वह बहुत बेपरवाह था। माँ-बाप को उसकी बहुत चिंता रहती थी। 33 वर्ष की अवस्था में उसका विवाह हुआ। अपनी पत्नी के प्रेम में पड़कर उसने घर से निकलना ही बंद कर दिया। एक दिन हैजे के प्रकोप से पत्नी की मृत्यु हो जाती है। कुछ ही समय बाद माँ-पिता का भी देहांत हो जाता है। पालू अपने दो वर्ष के पुत्र सुखदयाल को अपनी भाभी को सौंपकर साधू बन जाता है। अब उसका निवास स्थान ऋषिकेश है और नाम है विद्यानंद। उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल जाती है लेकिन उसके मन को शांति नहीं मिलती। वह अपने गुरु के पास जाता है। गुरु उसे गाँव जाने का आदेश देते हैं। गाँव पहुँचकर वह अपने पुत्र की दुर्दशा देखता है। रात को अपने पुराने कमरे में अपने पुत्र के साथ सोता है। स्वप्न में देवी दर्शन देती हैं और उसे सेवा का अर्थ समझाती हैं। देवी कहती हैं, "शांति के लिए सेवा मार्ग की आवश्यकता है। पर्वत छोड़ और नगर में जा। वहाँ दुखीजन रहते हैं, उनके दुख दूर कर। किसी के घाव पर फाहा रख, किसी के टूटे हुए मन को धीरज बंधा। परंतु यह रस्ता भी तेरे लिए उपयुक्त नहीं। तेरा पुत्र है तू उसकी सेवा कर। तेरे मन को शांति प्राप्त होगी। यह सुनते ही स्वामी जी के नेत्रों से पर्दा हट गया। जागे तो वास्तविक भेद उन पर खुल चुका था कि मन की शांति कर्त्तव्य के पालन से मिलती है। उन्होंने सुखदयाल को ज़ोर से गले लगाया और उसके सूखे मुख को चूम लिया।"8

कर्त्तव्य पालन के कई उच्चादर्श उनकी कहानियों में आसानी से देखे जा सकते हैं। उनकी एक कहानी है 'राजा'। इस कहानी में एक आदर्श शासक कैसा होना चाहिए, जनता के प्रति उसका व्यवहार कैसा होना चाहिए इस पर प्रकाश डाला गया है। इसमें राजा रणजीत सिंह के जीवन की एक घटना का वर्णन है। कथा स्थल लाहौर है। कथा सार इस प्रकार है- एक बार भयानक अकाल पड़ा। जनता दाने-दाने के लिए मोहताज हो गई। एक गरीब धोबी परिवार था। परिवार में एक बूढ़ा, विधवा बहू और एक पोता और एक पोती थे। बूढ़े के बेटे का देहांत हो चुका था। अकाल इतना भयानक था कि कई दिनों तक पेड़ों के पत्ते उबालकर खाने पड़े। राजा रणजीत सिंह ने अपनी जनता को राहत देने के लिए महल के अन्न को बांटने का फैसला किया। बूढ़ा और उसका पोता भी अन्न लेने पहुंचे। प्रति परिवार बीस सेर अनाज मिल रहा था। लेकिन धक्का-मुक्की में वे अन्न ले न सके। निराश होकर वापस जा रहे थे तो एक सरदार ने उनकी विनती पर उन्हें अन्न दिलवा दिया। बूढ़े-पोते दोनों को लालच आ गया। उन्होंने बीस सेर और मांगा। मगर चालीस सेर बूढ़े से उठता न था। सरदार दया करके उनके घर तक अन्न छोड़ गया। जब सरदार वापस जा रहा था तो सड़क पर जा रहे सैनिकों ने उन्हें सलाम किया। बाद में बूढ़े के पूछने पर सैनिकों ने बताया कि यही तो महाराज थे। कहानी म एन राजधर्म की सच्ची व्याख्या हुई है। राजा का कर्तव्य है कि अपना सब कुछ त्यागकर भी जनता की रक्षा करे। आदर्श की स्थापना के करके लेखक कहानी को समाप्त कर देता है। लेखक का कथन है कि, "यह महाराज थे, वही महाराज जिनकी आँख के इशारे पर फौजों में हलचल मच जाती थी, जो अपने युग के सबसे बड़े राजा थे, जिनके सामने अभ्युदय हाथ बांधता था। आज ये एक धोबी के घर गेहूं की गठरी छोड़ने आए हैं। यह सच्चे महाराज हैं। इनका राज्य दिलों पर है।"9

सुदर्शन की कहानियों में उपयोगितावादी दृष्टिकोण अपनाया गया है। उनकी कहानियों में नैतिक उपदेश के साथ-साथ भाषा का सरल रूप और वर्णन शैली में स्वाभाविकता मिलती है। कहानी के उपदेशपरक होने पर विचार करते हुए सुदर्शन लिखते हैं कि, "कहानी से उपदेश मिल जाए, यह दूसरी बात है, उसमें प्रकट रूप से उपदेश आया और कहानी कला-हीन हुई। वह उपदेश है, वह व्याख्यान है, परंतु कहानी नहीं। अब कहानी का जो नवीन युग शुरू हुआ है, वह घर के साधारण जीवन-वर्णन की कहानियों का युग है। वर्तमान समय का सर्व-श्रेष्ठ गल्प लेखक वह है, जो गार्हस्थ-जीवन का चित्र खींचकर रख दे। माँ-पुत्र बैठते हैं तो क्या बाते करते हैं? पति-पत्नी में मनमुटाव हो जाता है, तो उनके दिल में क्या विचार आते हैं? वह किस तरह सुलह-सफाई करना चाहते हैं, मगर

लज्जा उनकी जीभ पकड़ लेती है। वृद्धावस्था में बीते हुए जोबन काल की स्मृति किस तरह आदमी के दिल को उदास कर देती है, उसकी आंखे किस तरह सजल हो जाती हैं? माता और पिता की, बेटी और बेटे की, बहन और भाई की मुहब्बत में कितना अंतर है, नव-युवती और बुड्ढी स्त्री के विचारों में कैसा भेद होता है? ये सब बातें हैं, जो वर्तमान युग के गल्प लेखक के लिए अत्युत्तम विषय हैं। बाज़ार की सैर से हृदय कुसुम खिल जाता है, परंतु जो आध्यात्मिक आनंद घर के आँगन में है, वह बाहर कहाँ?"10 प्रेमचंद भी कहानी की इस भूमिका को महत्त्व देते हैं। प्रेमचंद ने एक स्थल पर कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, "यह तो सभी मानते हैं कि आख्यायिका का प्रधान धर्म मनोरंजन है, पर साहित्यिक मनोरंजन वह है जिससे हमारी कोमल और पवित्र भावनाओं को प्रोत्साहन मिले – हममें सत्य, निस्वार्थ सेवा, न्याय आदि देवत्व के जो अंश हैं, वे जागृत हों। कला में मानवी आत्मा की वह चेष्टा है, जो उसके मन में अपने आपको पूर्ण रूप देखने की होती है।"11

भारत में परिवार का महत्त्व दुनिया के किसी भी भाग से अधिक है। परिवार के बिना हम भारतीय जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। यही कारण है कि शायद ही कोई लेखक होगा जिसने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में परिवार की भूमिका और उसके महत्त्व को रेखांकित न किया हो। परिवार संस्था पर सुदर्शन की गहरी आस्था है। उनकी कहानियों में परिवार के सदस्य एक-दूसरे के लिए तरह-तरह के बलिदान देने के लिए तत्पर रहते हैं। उदाहरण के लिए 'अंधेरी दुनिया' कहानी को देखा जा सकता है। कहानी एक अंधी लड़की रजनी की है। जब वह तीन वर्ष की थी तो उसकी आंखो की रोशनी चली गई। जवान होने पर उसके माता-पिता को उसके विवाह की चिंता हुई। पिता के एक दोस्त के बेटे लाला सीताराम ने विवाह का प्रस्ताव दिया। रजनी का वैवाहिक जीवन बहुत सुखद था। एक बेटा हुआ जिसका नाम सूरजपाल रखा। एक दिन रजनी के पति के डॉक्टर मित्र ने उसकी आँखों को देखकर कहा कि ये फिर से देख सकती हैं। ऑपरेशन सफल हुआ। तेरह दिन के लिए पट्टी बांधी गई। बारहवें दिन उसने अपने पति और बच्चे को देखने के लिए पट्टी खोल दी। एक क्षण के लिए दोनों को देख भी लिया और फिर रोशनी पुनः चली गई। कुछ समय बाद पति और बच्चे को चेचक हुआ। उसने पूरी जी-जान से पति और बच्चे की सेवा की। वे ठीक हो गए। पति बोला कि अगर तुम देख सकती तो , "मेरी और तुम्हारे सूरजपाल की सूरत ऐसी बदल गई है कि देखकर डर आता है। मैं बैठी थी और चिल्लाकर बोली- परंतु मेरी आँखों में तुम्हारी सूरतें समा चुकीं हैं, उन्हें कौन बदल सकता है। संसार की आँखों में तुम बदल जाओ, पर मेरी आँखों में तुम सदा वैसे ही सुंदर, वैसे ही मनोहर हो। मैं सोचती थी परमात्मा ने मेरी आँखें छीनकर मुझपर अन्याय किया है। परंतु आज मुझे मालूम हुआ कि इस अन्याय के परदे में उसकी अपार दया छिपी थी। तुम्हारी सुंदरता मेरे दिल में सदा जीती रहेगी। उसके लिए मौत नहीं है।"12 रजनी के रूप में लेखक ने एक ऐसे पात्र की रचना की है को देख न पाने पर भी आशा की ज्योति के प्रकाश से भरी हुई है। स्याह अंधेरे में प्रकाश की किरण खोज लेना सुदर्शन की विशेषता है। सुदर्शन पात्र के दिल के भीतर घुसकर उसके अंतर्मन की अभिव्यक्ति करना चाहते थे। उन्होंने एक स्थान पर इस विषय पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि, "वर्तमान युग का कहानी लेखक बाहर का कहानी लेखक नहीं अंदर का कहानी लेखक है। दुनिया को देखने वाले बहुत हो चुके हैं, अब दिल और घर को देखने वालों की आवश्यकता है। बाहर क्या हो रहा है? किस तरह हो रहा है? यह हर कोई देखता है। परंतु घर और दिल के अंदर क्या हो रहा है? वहाँ प्रवेश करना, उन्हें देखना, और फिर जो कुछ वहाँ दिखाई दे , उसे दुनिया से सम्मुख रखना आसान नहीं। और यही समस्या है, जिसे हल करने के लिए बीसवीं सदी का कहानी-लेखक साहित्य-क्षेत्र में उतरा है"13 फिल्मी नाटकीयता भी इस कहानी में स्पष्ट दिखाई देती है। आँखों की रोशनी आना और तुरंत चले जाना अविश्वसनीय फिल्मी प्रसंग ही लगते हैं। तमाम नाटकीय घटनाक्रम के बाद स्याह पर सफेद की विजय होती है। सुदर्शन के यहाँ कहानी एक सचेत प्रक्रिया न होकर जीवन में सकारात्मकता की तरफ बढ़ाया गया एक कदम है।

सुदर्शन की कहानियों में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव भी देखा जा सकता है। विलायती कपड़े के बहिष्कार करने वाले आंदोलन पर केन्द्रित एक कहानी 'हार-जीत' है। यह कहानी 1923 में प्रकाशित 'सुप्रभात' नामक संकलन में प्रकाशित हुई। सेठ नरोत्तम दास विलायती कपड़े बेचने वाला एक बड़ा व्यापारी है। देश में विलायती वस्त्रों के बहिष्कार का आंदोलन चल रहा है। नरोत्तम दास की समझ है कि यह आंदोलन जल्द ही खत्म हो जाएगा। इसलिए वह इस आंदोलन के विरोध में है। लेकिन उसका पुत्र लखमीचन्द इस आंदोलन का सक्रिय कार्यकर्ता है। लखमीचन्द अपने सारे विलायती कपड़े जला देता है और खादी पहनने लगता है। उसकी माँ भी उसका समर्थन करती है। सेठ नरोत्तम दास अपने बेटे को घर से निकाल देता है। माँ भी खद्दर धारण करती है और अपने बेटे के पास रहने के लिए चली जाती है। एक बार जब लखमीचन्द एक विलायती कपड़े के व्यापारी की दुकान पर विरोध प्रदर्शन कर रहा होता है तो वह व्यापारी उसे अपने पिता की दुकान पर स्वयंसेवकों का पहरा बैठाने के लिए कहता है। अगले दिन लखमीचन्द खुद पंद्रह-बीस स्वयंसेवकों के साथ अपने पिता की दुकान पर प्रदर्शन करने के लिए पहुंचता है। पिता नरोत्तमदास का हृदय परिवर्तन हो जाता है और विलायती कपड़े का व्यापार छोड़कर स्वयं खद्दर धारण कर लेता है। अपनी पत्नी के लिए चरखा उपहार में लाता है। कहानी का कथानक राष्ट्रीय आंदोलन से प्रेरित है और अपने चरम पर पहुँचकर खल पात्र के हृदय परिवर्तन को समाधान के रूप में प्रस्तावित करती है। यह यथार्थ पर आदर्श की विजय है। प्रेमचंद ने यथार्थ और आदर्श पर विचार करते हुए अपनी पुस्तक 'साहित्य का उद्देश्य' में लिखा है कि, "यथार्थवादियों का कथन है कि संसार में नेकी बदी का फल कहीं मिलता नज़र नहीं आता, बल्कि बहुधा बुराई का परिणाम अच्छा और भलाई का बुरा होता है। आदर्शवादी कहता है, यथार्थ का यथार्थ रूप दिखाने से फायदा ही क्या, वह तो अपनी आँखों से देखते ही हैं। कुछ देर के लिए तो हमें इन कुत्सित व्यवहारों से अलग रहना चाहिए, नहीं तो साहित्य का मुख्य उद्देश्य ही गायब हो जाता है। वह साहित्य को समाज का दर्पण मात्र नहीं मानता, बल्कि दीपक मानता है, जिसका काम प्रकाश फैलाना है। भारत का प्राचीन साहित्य अदर्शवाद का ही समर्थक है। हमें भी आदर्श ही की मर्यादा का पालन करना चाहिए। हाँ, यथार्थ का उसमें ऐसा सम्मिश्रण होना चाहिए कि सत्य से दूर न जाना पड़े।"14

अपने कहानी संग्रह 'नगीने' (1947) की भूमिका में सुदर्शन अच्छी कहानी का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि, "अच्छी कहानी वह है, जो काल्पनिक होते हुए भी अपना आधार सत्य पर रखती है, या किसी की जड़ें ख्वाब और ख्याल में न हों, बल्कि इसी दुनिया में हों। दूसरे शब्दों में अच्छी कहानी दुनिया की साधारण घटनाओं में से चुनी हुई हर वह घटना है, जिससे पाठक का मनोरंजन हो सकता है। हाँ यह जरूर है, कि कहानी लेखक के पास एक चौखटा हो, और वह अपनी चुनी और छांटी हुई घटना को उस चौखटे में बिठा सकने की ताकत रखता हो।"15 कहानियों के कथानक की तलाश में सुदर्शन किसी काल्पनिक लोक में विचरण नहीं करना चाहते बल्कि वे अपने आस-पास की दुनिया से ही कथानक का चयन करने को वरीयता देते हैं। इस विषय पर उनका कथन है, "इसका मतलब यह है कि पुराने जमाने में तलिस्मी कहानियों के लेखकों को अपनी कहानियों का मसाला लेने के लिए परिस्तान और जादूपुरी में जाने की जरूरत थी , मगर आजकल के लेखक को अपनी कहानी का मसाला ढूँढने के लिए कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं, न अपना दिमाग खुरचने की और बाल नौचने की जरूरत है। कहानियाँ हर जगह बिखरी हुई हैं। जरूरत देखने वाली आँख और लिखने वाले कलम की है। फिर हर शहर के हर बाज़ार में, और हर सड़क के हर मोड़ पर कहानियाँ हैं।"16

सुदर्शन की कहानियों की जड़ें जगत और मन के भीतर बहुत गहरे चले जाने के कारण पाठकों के हृदय को आंदोलित करने की अपूर्व क्षमता से युक्त हैं। स्वाभाविकता और सहजता उनकी कहानियों के दो विशेष गुण हैं। उनकी कहानियों के कथानक सामाजिक परिवेश से ग्रहण किए गए हैं, जिनमें उनकी अद्भुत वर्णनात्मकता क्षमता के दर्शन होते हैं। उन्होंने भारत ही नहीं, बल्कि विदेशी जीवन को भी अपनी कहानियों का विषय बनाया है। 'एथेंस का विद्यार्थी' कहानी यद्यपि विदेशी पृष्ठभूमि पर आधारित है, लेकिन इसकी केंद्रीय समस्या भारतीय है।"17

सुदर्शन की एक कहानी है 'आशीर्वाद'। यह कहानी लाजवंती नाम की एक माँ की कहानी है। लाजवंती का बेटा हेमराज बहुत बीमार हो जाता है। वैद्य भी जवाब दे देता है। लाजवंती अपने बेटे की रक्षा करने के लिए देवी से गुहार लगाती है और तीर्थ-यात्रा करने का संकल्प लेती है। हेमराज ठीक हो जाता है। कुछ महीने बाद वह तीर्थ-यात्रा पर निकलने की तैयारी

करती है। जिस रात को वह तैयारियों में लगी होती है तो उसे पड़ोस के घर से पड़ोसन वृद्धा हरो के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। लाजवंती सहानुभूति प्रकट करते हुए हरो का दुख जानना चाहती है। काफी संकोच के बाद हरो बताती है कि बेटी की बारात के आवभगत के लिए उसके पास एक भी पैसा नहीं है। लाजवंती तुरंत अपनी तीर्थ-यात्रा स्थगित कर देती है और उसके लिए रखे गए 200 रुपए हरो को दे देती है। हरो की बेटी का विवाह धूम-धाम से हो जाता है। गाँव भर में लाजवंती की तीर्थ-यात्रा पर न जाने पर चर्चा होने लगती है। अधिकांश लोगों का यह विचार था कि तीर्थ-यात्रा स्थगित करके लाजवंती ने उचित नहीं किया। देवी माँ इसका दंड अवश्य उसको देंगी। लाजवंती भी डर जाती है। वह मंदिर जाती है तो वहाँ देखती है कि वृद्धा हरो मंदिर में देवी माँ से लाजवंती के बेटे और पति के जीवन की खुशहाली के लिए प्रार्थना कर रही है। लाजवंती का सारा डर दूर हो जाता है। कहानी का अंत एक स्वप्न से होता है। "रात को स्वप्न में वह फिर देवी के सम्मुख थी। एकाएक देवी की मूर्ति ने अपने सिंहासन से नीचे उतरकर लाजवंती को गले से लगा लिया, और कहा – "तूने एक गरीब की सेवा की है, गोया मेरी सेवा की है। मैं तुझसे खुश हूँ, तेरे काम से खुश हूँ। लीग तीर्थ-यात्रा करते हें, तूने महा तीर्थ-यात्रा की है। सेवा तीर्थ-यात्रा से बढ़कर है।"18 यहाँ मधुरेश जी के इस कथन से सहज ही सहमत हुआ जा सकता है, "पारिवारिक जीवन की अनुभूतियाँ और मनुष्य के चरित्र में निहित त्याग और आदर्श की भावना को उद्घाटित करके सुदर्शन ने वस्तुतः उसी कहानी धारा के विकास में योग दिया जो प्रेमचंद की अपनी परिचित जमीन थी।"19

निष्कर्षत

यह कहा जा सकता है कि सुदर्शन की कहानियों में अंत सुखांत ही होता है। उनकी लगभग प्रत्येक कहानी असत्य पर सत्य की जीत को चित्रित करती है। वे अपनी कहानियों में यथार्थ को प्रतिबिंबित करते हैं लेकिन कहानी जब चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है तो वे यथार्थ की कटुता को आदर्श की मिठास में प्रस्तावित करते हैं। इस प्रकार स्याह वास्तविकता की पराजय उनकी कहानियों का मूल मंत्र है। अधिकांश कहानियों में सुदर्शन ने जो समस्या के समाधान दिए हैं वे व्यावहारिक न होकर मानवतावादी हैं। सुदर्शन की कहानियों में युगानुरूप आदर्शवादी दृष्टि का आग्रह स्पष्ट दिखाई देता है। इससे कई स्थलों पर उनकी कहानियों में यथार्थवादी पकड़ ढीली हुई है। उनकी कहानियों में संयोग के रूप में घटनाएँ तीव्रता से घटती हैं। भौतिक सुखों का त्याग इनके पात्र निःसंकोच कर देते हैं। उच्च मानवीय गुणों के प्रदर्शन के लिए वे धन-सम्पदा को ठोकर मारने में देर नहीं करते। प्रेमचंदयुगीन कहानियों पर विचार प्रकट करते हुए मधुरेश का कथन है, "संयोग और दैवी विधान के अतिरेकपूर्ण उपयोग के कारण इस दौर की अधिकतर कहानियों में कथानक का विकास बहुत स्वाभाविक ढंग से नहीं हुआ है। ये संयोग और पात्रों की आदर्शवादी परिणति उन्हें विश्वसनीय रूप से हमारे सामने नहीं आने देतीं।"20 निस्संदेह सुदर्शन हिंदी साहित्य के महत्त्वपूर्ण कथाकार हैं।

संदर्भ सूची

1. मैं इनसे मिला (भाग 1), पद्म सिंह शर्मा कमलेश, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 1952, पृष्ठ 37
2. हिंदी कहानी के अठारह कदम, संपादक बटरोही, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002, पृष्ठ 29
3. हिंदी कहानी, परमानंद श्रीवास्तव, ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर, 1965, पृष्ठ 106
4. सुदर्शन सुधा, सुदर्शन, इंडियन प्रेस, प्रयाग, 1926, पृष्ठ 101
5. मैं इनसे मिला (भाग 1), पद्म सिंह शर्मा कमलेश, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 1952, पृष्ठ38-39
6. तीर्थ-यात्रा, सुदर्शन, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1945, पृष्ठ 71
7. वही, पृष्ठ 39
8. सुदर्शन-सुधा, सुदर्शन, इंडियन प्रेस, प्रयाग, 1926, पृष्ठ 206-207
9. वही, पृष्ठ 13
10. तीर्थयात्रा, सुदर्शन, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1945, पृष्ठ 9-10, (भूमिका)
11. प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, प्रेमचंद, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1933, पृष्ठ 09-10
12. तीर्थयात्रा, सुदर्शन, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1945, पृष्ठ 90
13. वही, पृष्ठ 10, (भूमिका)
14. साहित्य का उद्देश्य, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1954, पृष्ठ 39
15. नगीने, सुदर्शन, वोरा एंड कंपनी पब्लिशर्ज लिमिटेड, बंबई, 1947, पृष्ठ 4
16. वही, पृष्ठ 5
17. हिंदी कहानीकारों के कथा चिंतन के संदर्भ में उनके कहानी साहित्य का मूल्यांकन, तरुलता मटियानी, प्रकल्प प्रकाशन, हलद्वानी, 1995, पृष्ठ 28-29
18. तीर्थयात्रा, सुदर्शन, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1945, पृष्ठ 28
19. हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009, पृष्ठ 19
20. वही, पृष्ठ 17